

1. औद्योगिक विकास
2. प्रमुख उद्योग

अध्याय-18

औद्योगिक विकास

1. पिछड़ा पन : हिमाचल प्रदेश औद्योगिक विकास की दृष्टि से पिछड़ा क्षेत्र है। अपनी भू-संरचना व जलवायु के कारण यह क्षेत्र मंद व रुग्ण माना जाता है। अभी भी लगभग 70 प्रतिशत व्यक्ति कृषि पर आश्रित हैं। उद्योग व निर्माण में लगभग 2 प्रतिशत व्यक्ति कार्यरत हैं। सकल घरेलू उत्पाद का केवल 21 प्रतिशत भाग ही उद्योगों से प्राप्त होता है। बड़े उद्योगों का अभाव है। मध्यम आकार के लगभग 50 उद्योग राज्य में हैं। भारत सरकार ने सम्पूर्ण राज्य को औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ा क्षेत्र घोषित किया है। 1983 तक प्रति हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में 11 कारखाने थे जबकि समस्त भारत का औसत 24 कारखाने था।

पिछड़ेपन के कारण :- औद्योगिक पिछड़ेपन के कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं।

(i) **धरातल की बनावट :** हिमाचल प्रदेश पहाड़ी राज्य है जिसकी ऊंचाई 300 मीटर से लेकर लगभग 6500 मीटर है। अतः धरातल ऊंचा-नीचा, कटा-फटा है। कृषि केवल 10 प्रतिशत भाग पर ही होती है। कृषिगत कच्चा माल जैसे कपास, पटसन, गन्ना व तिलहन जैसी फसलें यहां पैदा नहीं होती। धरातल के कारण ही सिंचाई की बड़ी योजना यहां कार्यान्वित नहीं की जा सकती। कृषि बड़े फार्मों में यन्त्रों की सहायता से नहीं हो सकती।

(ii) **यातायात के साधनों का अभाव :** राज्य में रेल मार्ग व वायु मार्ग नगण्य जैसे हैं। सड़कों का प्रति सौ कि०मी० में अनुपात समस्त भारत से बहुत है। जो सड़कें बनी भी हैं। वे अच्छे मौसम में ही प्रयोग हो सकती हैं। क्योंकि वे कच्ची हैं। पुलों का अभाव है। वर्षा या बर्फ पड़ने पर वे टूट जाती हैं व मलवा गिर जाने से महीनों बन्द रहती हैं।

(iii) **चालक शक्ति का अभाव :** राज्य में कोयला व खनिज तेल नहीं निकाला जाता। जल-विद्युत सम्भावना का मात्र 2 प्रतिशत भाग ही राज्य विकसित कर पाया है। सर्दियों में बिजली की मांग अधिक व पूर्ति कम होती है। बड़े उद्योग लगाने पर स्थिति जटिल हो जायेगी।

(iv) **खनिज पदार्थों का अभाव :** बुनियादी खनिज जैसे कोयला, लोहा तांबा, अभ्रक मैंगनीज, बाक्साइट आदि राज्य में पर्याप्त मात्रा में व अच्छी किस्म के नहीं पाये जाते और न ही इनका खनन होता है।

(v) **पूंजी का अभाव :** राज्य में लोग गरीब है। आय, बचत व निवेश कम है। सरकार की आय कम है। वह स्वयं भी अपने खर्च के लिए भारत सरकार की सहायता पर निर्भर है। पूंजी के अभाव में कुछ बड़ी परियोजनाएं स्वीकृत होने के बाद भी कई वर्षों तक अधर में लटकी रहती हैं।

(vi) राजनैतिक कारण : अप्रैल 1948 से पूर्व यह राज्य छोटी-छोटी रियासतों में बंटा था। उनके राजाओं के पास न तो पर्याप्त धन था और न सड़कें थीं। बिजली, सड़क व पूंजी के अभाव में कोई भी उद्योग कैसे स्थापित होता।

2. औद्योगीकरण की सम्भावना : औद्योगीकरण अनिवार्यता है ताकि भूमि पर जनसंख्या का दबाव कम किया जा सके और रोजगार के अतिरिक्त अवसर जुटाये जा सकें। पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त करने के बाद इस दिशा में काफी ठोस प्रयास हुए हैं। औद्योगीकरण की सम्भावनाएं बढ़ी हैं। यह तथ्य निम्न बातों से स्पष्ट हो जाता है :-

- (i) अर्थव्यवस्था की सहायक संरचनाओं का विकास तेजी से हो रहा है। शत प्रतिशत गांवों का विद्युतीकरण हो चुका है। साक्षरता समस्त भारत से अधिक है। तकनीकी व इंजीनियरिंग शिक्षा शुरू हो जाने से मानव संसाधनों की कमी नहीं। सड़कों का जाल बिछाया जा रहा है।
- (ii) कृषि पैदावार में सेब, आलू, अदरक, व चाय की नकदी फसलें बड़ी मात्रा में विक्रय योग्य अधिक्य दे रही है। इन पर आधारित उद्योगों का विकास किया जा सकता है।
- (iii) खनिजों में चूना व जिप्सम के पर्याप्त भण्डार हैं जिस पर सीमेंट उद्योग खड़ा किया जा सकता है।
- (iv) ठण्डी जलवायु व धूल मुक्त वातावरण, इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग की पहली आवश्यकता है, जो राज्य में उपलब्ध है। आगामी वर्षों में इस उद्योग के फैलने की बहुत अधिक सम्भावना है।
- (v) जनता शान्ति प्रिय है। मालिक-मजदूर के सम्बन्ध अच्छे हैं। अतः देश विदेश के उद्यमी यहां पूंजी लगाने को तैयार हैं।
- (vi) अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर तेज आर्थिक विकास समाजवाद द्वारा किया जा सकता है। यह धारणा मिथ्या साबित हो रही है। अतः राज्य सरकार अपनी नीति में परिवर्तन कर निजी क्षेत्र के लिए अधिक क्षेत्र खोल रही है।

अतः राज्य में निम्न प्रकार के उद्योग स्थापित किए जा सकते हैं।

- (i) चूने के पत्थर पर आधारित सीमेंट उद्योग।
- (ii) वनों पर आधारित उद्योग जैसे-फर्नीचर, कागज, गत्ता, रंग-रोगन आदि।
- (iii) रेशम व ऊन पर आधारित कताई बुनाई उद्योग।
- (iv) फलों पर आधारित-गत्ता पेटी बनाना, शीत भण्डार, फलों का डिब्बा बन्दी रस, पेय पदार्थ व जैम-जैली जैसे उत्पाद।
- (v) आलू पर आधारित तैयार खाद्य पदार्थ।
- (vi) शराब बनाने का उद्योग।
- (vii) कृषि यन्त्र व उपकरण बनाने का उद्योग।
- (viii) धूलमुक्त वातावरण के अनुकूल सूक्ष्म यन्त्र, वैज्ञानिकी, इंजीनियरी व इलेक्ट्रॉनिकी यन्त्रों व वस्तुओं का उत्पादन।

3. सरकार व औद्योगीकरण

सरकार ने औद्योगीकरण को गति प्रदान करने हेतु कुछ कदम उठाये हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख नीलिखित हैं :-

(1) औद्योगीकरण नीति प्रस्ताव : हिमाचल प्रदेश सरकार की औद्योगिक नीति की मुख्य बातें हैं :-

- (अ) औद्योगिक विकास को उच्च-प्राथमिकता प्रदान की जायेगी क्योंकि इसी के द्वारा राज्य अपने प्राकृतिक साधनों का उपयोग कर रोजगार के अवसर बढ़ा सकता है।
- (ब) घरेलू व ग्रामीण उद्योगों के क्षेत्र में एक भारी अभियान चालू किया जाएगा ताकि सकल घरेलू उत्पाद में उद्योगों का अंश बढ़ाया जा सके।

(2) उद्योग समूहों की पहचान : राज्य में कांगड़ा, सोलन व सिरमौर जिलों में बुनियादी उद्योग समूहों की पहचान कर ली गई है।

- (i) कांगड़ा जिले में चमड़ा, सीमेंट, कपड़ा, मोटर गाड़ियों के कल-पुर्जे, चाय, गलीचा, रेशम, मछली पालन व आयुर्वेदिक दवाइयां बनाने की इकाइयां खोलने की पहचान की है।
- (ii) सोलन जिले में सूक्ष्म तन्त्र, इलैक्ट्रॉनिक यन्त्र, घड़ियां बनाने की 35 इकाइयां स्थापित करने का प्रावधान रखा गया है।
- (iii) सिरमौर जिले में दवा निर्माण, दियासलाई, सैरेमिक उद्योग की 10 इकाइयां स्थापित की जायेंगी। इन सभी इकाइयों से राज्य में लगभग 15 हजार व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा।

(3) औद्योगिक क्षेत्र व सम्पदाओं की स्थापना : सरकार ने प्रत्येक जिले में औद्योगिक क्षेत्र व सम्पदायें बनाने का फैसला किया है। इन क्षेत्रों में सभी सहायक संरचनायें व भूमि उपलब्ध कराई जाती है। कई मामलों में औद्योगिक शेड मशीन युक्त लगाकर उद्यमियों को कार्य संचालन हेतु प्रदान किये जाते हैं।

छठी योजना तक राज्य में सोलन व परवाणु, बरोटीवाला, धर्मपुर (सोलन जिला), गगरेट व मेहतपुर (ऊना) संसारपुर टेरेस नगरोटा बगवां, ज्वाली व कन्दरोड़ी (कांगड़ा) व काला अम्ब सिरमौर, व शोच शिमला में औद्योगिक सम्पदायें स्थापित की हैं। सातवीं योजना में नाहन, कांगड़ा, बिलासपुर, मण्डो हमीरपुर, चम्बा, कुल्लू, लाहौल-स्पिति व किन्नौर में औद्योगिक सम्पदायें स्थापित करने का प्रावधान रखा गया था।

(4) जिला उद्योग केन्द्र : प्रत्येक जिले में जिला उद्योग केन्द्र खोला गया है जो एक ही छत के नीचे ग्रामीण व लघु उद्योगों के लिए सभी प्रकार की सहायता व सुविधायें जुटाते हैं।

(5) पूंजी निवेश में भागीदारी : सरकार निजी क्षेत्र में उद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिए हिमाचल प्रदेश खनिज व औद्योगिक विकास निगम (एम.आई.डी.सी.) के माध्यम से 10 प्रतिशत पूंजी उपलब्ध करायेगी।

(6) औद्योगिक सहकारिता : ग्रामीण कारीगरों को लाभप्रद रोजगार उपलब्ध कराने और उन विचोर्लिओं से बचाने के लिए औद्योगिक सहकारी समितियों के गठन को प्रोत्साहित कर रही है।

(7) वित्तीय निगम की स्थापना : उद्योगों की वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सरकार हिमाचल प्रदेश वित्तीय निगम की स्थापना 1967 में की। इसमें हिमाचल प्रदेश सरकार व भारत सरकार की बराबरी की भागीदारी है। यह निगम मध्यम व लघु उद्योगों को मध्य व दीर्घ अर्वाध के लिए सहायता प्रदान करता है।

(8) उद्यम-निगमों का गठन : निजी क्षेत्र में पूंजी शामिल है। अर्थात् लोग उद्योग में निवेश झिझकते हैं। अतः सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र में उद्योगों का आधार तैयार करने के लिए कुछ निगम स्थापित किए हैं।

- (i) हिमाचल प्रदेश खनिज व औद्योगिक विकास निगम
- (ii) हिमाचल प्रदेश लघु उद्योग व निर्यात निगम
- (iii) हिमाचल प्रदेश राज्य हस्तशिल्प व हथकरघा निगम
- (iv) हिमाचल प्रदेश उद्यान उपज विपणन व विधायन निगम
- (v) हिमाचल प्रदेश कृषि उद्योग निगम
- (vi) हिमाचल प्रदेश खादी व ग्रामोद्योग निगम

(9) **प्रोत्साहन व सहायता अनुदान** : हिमाचल प्रदेश सरकार औद्योगिक इकाइयों को वित्तीय व अन्य किस्म की सहायता प्रदान करती है ताकि उद्योगपतियों को उत्साह मिले। उन्हें करों में छूट, तकनीकी मामलों में सहायता, सस्ती व सुनिश्चित चालक शक्ति, परिवहन लागत पर अनुदान तथा विनियोग में सहायता व अनुदान प्रदान किए जाते हैं।

(10) **विपणन की सुविधा** : तैयार माल को बेचने की प्रमुख समस्या होती है। राज्य सरकार अपने शोरूम, खुदरा विक्रय के स्टाल खोल रही है। विपणन के लिए एक विपणन व उपभोक्ता निगम की स्थापना की गई है। साथ ही कच्चे माल की आपूर्ति को सुनिश्चित व नियत भाव पर उपलब्ध कराने का प्रबन्ध किया जाता है।

4. वर्तमान स्थिति

हिमाचल प्रदेश में औद्योगीकरण कुछ समय पहले ही शुरू हुआ है। अभी यह अपनी शिशु अवस्था में है। अर्थव्यवस्था में मध्यम व लघु उद्योगों का योगदान मात्र 6 प्रतिशत रहा है। सातवीं योजना में औद्योगिक विकास की दर बढ़ाकर 10 प्रतिशत होने की आशा है। गत एक दशक में सभी प्रकार के मध्यम व लघु उद्योगों की स्थापना हुई है। सरकार द्वारा स्थापित निगम अच्छा काम कर रहे हैं। परिणामस्वरूप छठी योजना तक राज्य में 50 मध्यम व बड़े पैमाने के उद्योग स्थापित हो चुके हैं, इनमें से कुछ प्रमुख ऋषभ इस्पात, थीरानी कैमोकल्ज, रांगर बुयरी, सिद्धार्थ सुपर स्पिनिंग मिल, सरोरा पेपर व एलाइट प्रोडक्ट, प्युरेवाल व खन्ना की घड़ियों की इकाइयां, ईस्ट इंडिया केवलस, मोनाल पोटरि तथा राजवन (सिरमौर) व गगल (बिलासपुर) के सीमेंट कारखानों के नाम उल्लेखनीय हैं। इन उद्योगों में 200 करोड़ रुपये की पूंजी का निवेश किया गया है तथा इनमें सीधे रूप में 4000 लोगों को रोजगार मिला है।

दूसरा आर्थिक सर्वेक्षण (1981) की रिपोर्ट के आधार पर ज्ञात होता है कि गैर कृषि उद्यमों में ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में लगभग 37 हजार प्रतिष्ठान कार्यरत थे इनमें से लगभग 2000 सहकारी क्षेत्र में (5.5%) व लगभग 23 हजार (62%) सार्वजनिक क्षेत्र में थे। शेष 33 प्रतिशत प्रतिष्ठान निजी क्षेत्र में थे। शक्ति चालित इकाइयों की संख्या लगभग 7000 थी जो कुल प्रतिष्ठानों का लगभग 20 प्रतिशत थी।

रोजगार के विचार से 5 व्यक्तियों की रोजगार देने वाले 280, 6 से 9 व्यक्तियों को रोजगार प्रदान करने वाले 380 प्रतिष्ठान व 10 या अधिक व्यक्तियों को रोजगार देने वाले प्रतिष्ठानों की संख्या 56 थी। शेष 1 से 4 तक श्रमिक वाले प्रतिष्ठान या स्वकार्यरत उद्यम थे। स्पष्ट है कि अभी ग्रामीण व लघु इकाइयों का ही वर्चस्व है। मध्यम व बड़े आकार का औद्योगिक विकास अभी अविकसित ही है।

1989 तक मध्यम व बड़े आकार की 118 इकाइयां काम कर रही थीं जिनमें 14,580 व्यक्ति कार्य कर रहे थे। 300 करोड़ रुपये का विनियोग व लघु उद्योगों का क्षेत्र 195000 इकाइयां, 73 हजार व्यक्तियों को रोजगार प्रदान कर रही थीं इस क्षेत्र में 240 करोड़ रुपये का विनियोग हो चुका था।

(अ) निबन्धात्मक प्रश्न

- (i) "हिमाचल प्रदेश औद्योगिक दृष्टि से एक पिछड़ा राज्य है।" इस कथन को स्पष्ट करते हुए पिछड़ेपन के कारणों का वर्णन करो।
- (ii) "हिमाचल प्रदेश में औद्योगिक विकास की उज्ज्वल सम्भावना है।" इस कथन के पक्ष में तर्क दीजिए।
- (iii) औद्योगिक विकास के लिए सरकार द्वारा उठाये गये कदमों का संक्षेप में वर्णन करो।
- (iv) उद्योगों की वर्तमान स्थिति क्या है ? स्पष्ट करो।

(ब) लघु उत्तर-प्रश्न

- (i) हिमाचल में औद्योगिक विकास के लिए कौन-कौन से निगम बनाये गये हैं ? नाम लिखो।
- (ii) औद्योगिक क्षेत्र व सम्पदाओं का वर्णन करो।
- (iii) हिमाचल में कौन-कौन से उद्योग समूहों की पहचान की गई है ? लिखो।
- (iv) हिमाचल में किस प्रकार के उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं ? स्पष्ट करो।
- (v) औद्योगिक नीति प्रस्ताव का वर्णन करो।

(स) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

रिक्त स्थान भरो :-

- (i) सातवीं योजना में औद्योगिक विकास की दर प्रतिशत होने की आशा थी।
- (ii) बड़े मध्यम उद्योगों में लोगों को सीधे रोजगार मिला है।
- (iii) गैर कृषि उद्यमों में ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में प्रतिष्ठान कार्यरत थे।
- (iv) 1989 में बड़े व मध्यम उद्योगों की इकाइयां थीं।
- (v) लघु उद्योगों में व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त है।

सही (✓) व गलत (×) के चिन्ह लगाओ।

- (i) सम्पूर्ण हिमाचल प्रदेश को भारत सरकार ने औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ा राज्य घोषित किया है।
- (ii) राज्य इलेक्ट्रोनिक्स उद्योग के लिए अनुकूल नहीं है।
- (iii) वित्त निगम मध्यम व लघु उद्योगों को साख उपलब्ध कराता है।
- (iv) हिमाचल की अर्थव्यवस्था में उद्योगों का योगदान बहुत अधिक है।
- (v) सरकार उद्योगों को कोई प्रोत्साहन या सहायता नहीं दे रही।

